नाम - पूजा नाथ, विभाग - घ

H.W

गृहकार्य

प्र- 'अहिंसा के दूत' पाठ का सारांश।

उ- • बचपन में गांधीजी को प्यार से सभी मोहन के स्थान पर मोनिया कहते थे। पेड़ पर चढ़ना उसका शौक था। घर के लोगों को पेड़ से मोनिया के गिरने का डर लगता, किंतु वह निर्भीक थे। एक दिन वह अमरूद के पेड़ पर चढ़ गये। वह नीचे उतरते, इसके पहले ही उनके बड़े भाई वहां आ गए।

• उन्होंने उन्हे पेड़ पर चढ़े देखा, तो नाराज होकर उन्हे दो-चार थप्पड़ रसीद कर दिए। मोनिया रोते हुए मां के पास पहुंचे और बोले- "मां! भाई ने मुझे मारा।" मां ने सहज भाव से कह दिये- "जा, तू भी उसे मार आ।" मां के ऐसा कहते ही वह गंभीर होकर बोले- "ऐसा तुम कहती हो मां? मैं अपने बड़े भाई पर हाथ उठाऊं?" मां ने हंसते हुए कहा- "तो क्या हुआ? भाई-बहनों में तो लड़ाई-झगड़ा होता ही रहता है।' मोनिया तत्काल मां की बात काटते हुए बोले - 'तुम गलत हो मां, जो बड़ों को मारने की सीख देती हो। भाई मुझसे बड़े हैं।

• वे भले मुझे मार लें, किंतु मैं उन्हें नहीं मारूंगा।' मां यह सुनकर चकित रह गई। उन्होंने तो बड़े भाई को मारने की बात साधारण रूप में ~~कह~~ कह दी थी। मोनिया ने फिर कहा - "मां! जो मारता है, उसे तुम क्यों नहीं रोकती? तुम्हें उससे कहना चाहिए कि वह नहीं मारे, न कि मार खाने वाले से कहना चाहिए कि वह बड़े भाई को मारे।" अपने पुत्र के पवित्र हृदय ~~को~~ पर मां का सीना गर्व से फूल उठा। वे मोनिया को गले लगाकर बोली - 'बेटा!

• तूने इतनी अच्छी बातें कहाँ से सीखी? मालूम नहीं कि ईश्वर ने तेरे लिए क्या भाग्य रचा है?" आगे चलकर इसी मोनिया ने महात्मा गांधी के रूप में न केवल अपने देश, बल्कि विदेशों से भी अगाध श्रद्धा पाई और आज वे विश्व के महान आदर्श माने जाते हैं। सार यह है कि बड़ों का सम्मान छोटों का कर्तव्य है, किंतु इसकी शिक्षा बड़ों को अपने आचरण के द्वारा छोटों को देनी चाहिए।